<u>मेरी झोली छोटी पड़ गई रे</u>

मेरी झोली छोटी पड़ गई रे इतना दिया मेरी माता
मेरी बिगड़ी मां ने बनाई सोई तकदीर जगाई
ये बात न सुनी सुनाई
मैं खुद भी जी बतलाता, मुझे इतना दिया मेरी माता

मान मिला सम्मान मिला गुणवान मुझे संतान मिली
धन धान मिला नित ध्यान मिला
मां से ही मुझे पहचान मिली
घरबार दिया मुझे मां ने
बेशुमार दिया मुझे मां ने
जब जब मैं मांगने जाता, मुझे इतना दिया मेरी माता

मेरा रोग कटा मेरा कष्ट मिटा हर संकट मां ने दूर किया
भूल से कभी जो गरूर किया मेरे अभिमान को चूर किया
मेरे अंग संग हुई सहाई भटके को राह दिखाई
क़्या लीला मां ने रचाई
मैं कुछ भी समझ नहीं पाता, मुझे इतना दिया मेरी माता

उपकार करे भव तार करे सपने सब के साकार करे
न देर करे मां मेर करे भक़्तों के सदा भंडार भरे
महिमां है निराली मां की दुनिया है सवाली मां की
जो लगन लगाले मां की
मुश्किल में नहीं घबराता, मुझे इतना दिया मेरी माता

कर कोई जतन ऐ चचंल मन तूं हो के मगन चल मां के भवन
पा जाएं नयन पावन दर्शन हो जाए सफ़ल फ़िर ये जीवन

तूं थाम ले मां का दामन न चिंता रहे न उलझन
दिन रात करण कर सिमरण
क़्या कर माता कहलाता, मुझे इतना दिया मेरी माता ॥